काम करता है। प्रश्न यह है कि जिनकी आत्मा से बेईमानी के स्वर निकलते हैं, उन्हें दबाकर ईमान के स्वर कैसे निकाले जाएँ ? मैं कई वर्षों से इसी के चिन्तन में लगा हूँ। अभी मैंने यह सदाचार का तावीज़ बनाया है। जिस आदमी की भुजा पर यह बँधा होगा, वह सदाचारी हो जाएगा।

अथवा

जहाँ तक बिबिया का प्रश्न था, वह पति के व्यवहार से विशेष सन्तुष्ट न होने पर भी उससे रुष्ट नहीं थी। अभिमानी व्यक्ति अवज्ञा के साथ मिले हुए अधिक स्नेह का तिरस्कार करके वीतरागता के साथ आदर-भाव को स्वीकार कर लेता है। झनकू ने पत्नी में अनुराग न रखने पर भी अन्य धोबियों के समान उसका अनादर नहीं किया। यह विशेषता बिबिया जैसी स्त्रियों के लिए स्नेह से अधिक मूल्य रखती थी, इसी से वह रोम-रोम से कृतज्ञ हो उठी। 2×10=20

11-5-17 (Evening)

This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : 9044

Unique Paper Code : 52051416 GC

Name of the Paper : Hindi 'B'

Name of the Course : B.Com. (Prog.) (CBCS)

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी कहानी के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

हिंदी उपन्यास के विकास का सामान्य परिचय दीजिए।

2. 'बूढ़ी काकी' कहानी के आधार पर बूढ़ी काकी का चरित्र-चित्रण कीजिए। 12

अथवा

'गुण्डा' कहानी की मूल संवेदना पर विचार कीजिए।

3. 'सदाचार का तावीज़ में भ्रष्टाचार, अनैतिकता, विसंगतियों और मानव संवेदना के कई रूप देखने को मिलते हैं'– विवेचना कीजिए। 12

P.T.O.

अथवा

'मेले का ऊँट' पाठ का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. बिबिया का चरित्र-चित्रण कीजिए। 12

अथवा

'अंधेर नगरी' की कथावस्तु को स्पष्ट कीजिए।

5. किसी एक पर टिप्पणी कीजिए : 7

(क) भारतेन्दुयुगीन निबंध

(ख) एकांकी।

6. व्याख्या कीजिए :

(क) लड़ाई के समय चाँद निकल आया था। ऐसा चाँद, जिसके प्रकाश से संस्कृत-कवियों का दिया हुआ 'क्षयी' नाम सार्थक होता है। और हवा ऐसी चल रही थी जैसी कि बाणभट्ट की भाषा में 'दंतवीणोपदेशाचार्य' कहलाती। बजीर सिंह कह रहा था कि कैसे मन-मन भर फ्राँस की भूमि मेरे बूटों से चिपक रही थी, जब मैं दौड़ा-दौड़ा सूबेदार के पीछे गया था। सूबेदार लहना सिंह से सारा हाल सुन और कागजात पाकर उसकी तुरंत बुद्धि को सराह रहे थे और कह रहे थे कि तू न होता तो आज सब मर जाते।

अथवा

रूपा को अपनी स्वार्थपरता और अन्याय इस प्रकार प्रत्यक्ष रूप से कभी न दीख पड़ा था। वह सोचने लगी- 'हाय! मैं कितनी निर्दय हूँ जिसकी सम्पत्ति से मुझे दो सौ रुपया वार्षिक आय हो रही है, उसकी यह दुर्गति और मेरे कारण। हे दयामय भगवान, मुझसे बड़ी भारी चूक हुई है, मुझे क्षमा करो। आज मेरे बेटे का तिलक था। सैकड़ों मनुष्यों ने भोजन पाया। मैं उनके इशारों की दासी बनी हुई थी। अपने नाम के लिए, अपनी बढ़ाई के लिए सैकड़ों रुपए व्यय कर दिए; परन्तु जिसकी बदौलत हजारों रुपए खाए उसे इस उत्सव में भी भर पेट भोजन न दे सकी। केवल इसी कारण तो, कि वह वृद्धा है, दीन है, असहाय है!''

(ख) विधाता जब मनुष्य को बनाता है तब किसी की आत्मा में ईमान की कल फिट कर देता है और किसी की आत्मा में बेईमानी की। इस कल में से ईमान या बेईमानी के स्वर निकलते हैं, जिन्हें 'आत्मा की पुकार' कहते हैं। आत्मा की पुकार के अनुसार ही आदमी